



ਪੰਜਾਬ ਕੀ ਰਾਜਨੀਤਿ ਮੌਂ ਸ਼ਿਰੋਮਣਿ ਅਕਾਲੀ ਦਲ ਕੀ ਭੂਮਿਕਾ : ਸਰਦਾਰ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਸਿੰਹ ਬਾਦਲ ਕੇ ਪਰਿਪੇਕਥਾ ਮੌਂ ਏਕ ਅਧਿਅਨ

ਪਵਨ ਕੁਮਾਰ (ਸ਼ੋਧਾਰੀ) ਰਾਜਨੀਤਿ ਵਿਜ਼ਾਨ ਵਿਭਾਗ, ਜਨਤਾ ਵੈਦਿਕ ਕਾਲੇਜ ਬੱਡੌਤ, ਜ਼ਿਲਾ - ਬਾਗਪਤ, ਉਤਤਰਪ੍ਰਦੇਸ਼

ਡ੉. ਪ੍ਰਤੀਤ ਕੁਮਾਰ ਦਹਿਆ (ਸ਼ੋਧ ਨਿਰੰਦੇਸ਼ਕ) ਰਾਜਨੀਤਿ ਵਿਜ਼ਾਨ ਵਿਭਾਗ, ਚੌ. ਚਰਣਸਿੰਹ ਮਹਾਵਿਦਿਆਲਾਯ, ਬਾਗਪਤ, ਉਤਤਰਪ੍ਰਦੇਸ਼

ਸਾਰ: ਪੰਜਾਬ ਪ੍ਰਦੇਸ਼ ਉਤਰੀ ਭਾਰਤ ਕੇ ਰਾਜਨੀਤਿਕ, ਆਰਥਿਕ, ਸਾਂਸਕ੍ਰਤਿਕ ਏਂਵਾਂ ਸਾਮਾਜਿਕ ਪਰਿਪੇਕਥਾ ਮੌਂ ਮਹਤਵਪੂਰਣ ਸਥਾਨ ਰਖਤਾ ਹੈ। ਪੰਜਾਬ ਕੀ ਰਾਜਨੀਤਿ ਲੰਬੇ ਸਮਾਂ ਤਕ ਅਲਗ-ਅਲਗ ਸੰਸਕ੍ਰਤਿ, ਭਾਸ਼ਾ, ਧਰਮ, ਸੰਪ੍ਰਦਾਵ ਕੇ ਇੰਦ੍ਰ-ਗਿਰਦ ਹੀ ਘੂਮਤੀ ਰਹੀ ਹੈ। ਪਰਾਂਤ ਪੰਜਾਬ ਕੀ ਰਾਜਨੀਤਿ ਮੌਂ ਨਾਏ ਰਾਜਨੀਤਿਕ ਦਲ ਆਮ ਆਦਮੀ ਪਾਰਟੀ ਕੇ ਉਦਦੀ ਸੇ ਅਵ ਐਸਾ ਨਹੀਂ ਕਹਾ ਜਾ ਸਕਤਾ ਹੈ। ਪੰਜਾਬ ਕੀ ਰਾਜਨੀਤਿ ਮੌਂ ਸ਼ਵਤਤ੍ਰਤਾ ਸੇ ਪਹਲੇ ਕਾਂਗ੍ਰੇਸ ਔਰ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ ਪਾਰਟੀ ਤਥਾ ਸ਼ਵਤਤ੍ਰਤਾ ਕੇ ਪਥਾਰ ਸ਼ਿਰੋਮਣਿ ਅਕਾਲੀ ਦਲ ਤਥਾ ਕਾਂਗ੍ਰੇਸ ਹੀ ਬਾਰੀ-ਬਾਰੀ ਸੇ ਸੱਤਾਸੀਨ ਰਹੀਂ ਹੈਂ। ਪਰਾਂਤ 2017 ਕੇ ਵਿਧਾਨਸਭਾ ਚੁਨਾਵ ਮੌਂ ਆਮ ਆਦਮੀ ਪਾਰਟੀ ਨੇ ਸ਼ਿਰੋਮਣਿ ਅਕਾਲੀ ਦਲ ਤਥਾ ਕਾਂਗ੍ਰੇਸ ਕੋ ਚੁਨੌਤੀ ਦੀ। ਵਰ਷ 2017 ਸੇ 2022 ਤਕ ਆਮ ਆਦਮੀ ਪਾਰਟੀ ਸੁਖਵਿਪਕਥੀ ਦਲ ਤਥਾ 2022 ਸੇ ਅਵ ਤਕ ਸੱਤਾਧਾਰੀ ਦਲ ਕੇ ਰੂਪ ਮੌਂ ਭੂਮਿਕਾ ਕਾ ਨਿਰਵਹਨ ਕਰ ਰਹਾ ਹੈ। ਹਾਲਾਂਕਿ ਪੰਜਾਬ ਕੀ ਇਕਲੌਤੀ ਕ੍਷ੇਤ੍ਰੀਯ ਪਾਰਟੀ ਸ਼ਿਰੋਮਣਿ ਅਕਾਲੀ ਦਲ ਕੀ ਪੰਜਾਬ ਕੀ ਰਾਜਨੀਤਿ ਮੌਂ ਲੰਬੇ ਸਮਾਂ ਤਕ ਅਮਿਟ ਢਾਪ ਰਹੀ ਹੈ ਔਰ ਰਹੇਗੀ। ਪੰਜਾਬ ਕੀ ਰਾਜਨੀਤਿ ਮੌਂ ਇਸਕੀ ਨਿਰਾਂਤਰ ਭੂਮਿਕਾ ਕੋ ਨਗਣਾ ਕਰਕੇ ਨਹੀਂ ਆਂਕਾ ਜਾ ਸਕਤਾ ਹੈ। ਅਤ: ਸਮਸ਼ਟ ਗੁਰੂਦਵਾਰਾਂ ਕੋ ਮਹਾਂਤੋਂ ਸੇ ਛੁਡਾਨੇ, ਪੰਜਾਬੀ ਭਾਸ਼ਾ ਕੇ ਆਧਾਰ ਪਰ ਪੰਜਾਬੀ ਰਾਜਿਆਤ ਕੀ ਮਾਂਗ ਉਠਾਨੇ, ਪੰਜਾਬ ਕੇ ਅਧਿਕਾਰ ਕ੍਷ੇਤ੍ਰ ਮੌਂ ਪਾਨੀ ਕੋ ਬਚਾਨੇ ਹੇਤੁ ਆਂਦੋਲਨ ਤਥਾ ਪੰਜਾਬੀ ਸੰਸਕ੍ਰਤਿ ਔਰ ਵਿਰਾਸਤ ਕੋ ਬਚਾਨੇ ਮੌਂ ਸ਼ਿਰੋਮਣਿ ਅਕਾਲੀ ਦਲ ਕਾ ਮਹਤਵਪੂਰਣ ਯੋਗਦਾਨ ਰਹਾ ਹੈ।¹ ਪ੍ਰਸ਼ੰਸਾ ਸ਼ੋਧ ਪੱਤਰ ਕੇ ਉਦੇਸ਼ ਭੀ ਯਹੀ ਹੈ ਕਿ ਪੰਜਾਬ ਕੀ ਰਾਜਨੀਤਿ ਮੌਂ ਸ਼ਿਰੋਮਣਿ ਅਕਾਲੀ ਦਲ ਕੀ ਭੂਮਿਕਾ ਏਂਵਾਂ ਸਰਦਾਰ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਸਿੰਹ ਬਾਦਲ ਕੇ ਪਰਿਪੇਕਥਾ ਮੌਂ ਅਧਿਅਨ ਹੇਤੁ ਦ੍ਰਿੰਤੀਕ ਆਂਕਡਿਆਂ ਮੌਂ ਮਾਧਿਅਮ ਸੇ ਵਾਖਿਆਤਮਕ ਏਂਵਾਂ ਵਿਕਲਪਿਕ ਪਦਿੱਤਿ ਕੋ ਅਪਨਾਵਾ ਗਿਆ ਹੈ, ਜਿਸਮੌਂ ਵਿ਷ਯ ਸੇ ਸੰਬੰਧਿਤ ਸ਼ੋਧ ਪੱਤਰ, ਪੱਤਰ ਪਤਰਿਕਾਓਂ ਕੇ ਆਲੋਚਨਾ, ਏਂਵਾਂ ਰਿਪੋਰਟ ਇਤਿਆਦੀ ਕੇ ਮਾਧਿਅਮ ਸੇ ਜਾਨਕਾਰੀ ਜੁਟਾਈ ਗਈ ਹੈ।

ਸੀਰੀਅਫ਼ ਸ਼ਬਦ : ਪੰਜਾਬ ਕੀ ਰਾਜਨੀਤਿ, ਸ਼ਿਰੋਮਣਿ ਅਕਾਲੀ ਦਲ, ਕ੍਷ੇਤ੍ਰੀਯ ਪਾਰਟੀ, ਸਰਦਾਰ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਸਿੰਹ ਬਾਦਲ

¹ ਕੁਮਾਰ ਆਸਤੋ਷, ਪੰਜਾਬ ਮੌਂ ਚੁਨਾਵੀ ਰਾਜਨੀਤਿ (1966–2004) ਜੇਪੀਏਸ ਪੁਛ ਸੰਖਾ 112 ਸੇ 114.

प्रस्तावना :

राजनीतिक दल भारतीय लोकतंत्र के ढांचे के भीतर एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वैश्विक संदर्भ की जांच करने पर, यह स्पष्ट हो जाता है कि राजनीतिक दलों का ऐतिहासिक उद्भव आंतरिक रूप से स्वयं राजनीतिक विचारधाराओं के विकास से जुड़ा हुआ है। राजनीतिक दलों ने सफलतापूर्वक उन देशों में अपनी पैठ बना ली है, जहां लोकतांत्रिक प्रतिमानों को अपनाया गया है। राजनीतिक दलों का अस्तित्व मूल रूप से लोकतांत्रिक शासन से जुड़ा हुआ है, जो लोकतंत्र और राजनीतिक संस्थाओं के बीच सहजीवी संबंध का सुन्नाव देता है। राजनीतिक दलों की अनुपस्थिति राजनीतिक प्रक्रियाओं में नागरिक सहभागिता की सुविधा को कमजोर करेगी। नतीजतन, यह राजनीतिक दल ही हैं जो सार्वजनिक विमर्श को आकार देने के लिए जनता के साथ सक्रिय रूप से जुड़ते हैं। इस प्रकार, बेझहौत का मानना है कि “पार्टी शासन प्रतिनिधि सरकार का एक जीवंत सिद्धांत है,” जबकि फ़िनर का दावा है कि “प्रतिनिधि सरकार एक दलीय सरकार है।” प्रारंभ में, संयुक्त राज्य अमेरिका में राजनीतिक दल वकालत समूहों के रूप में उभरे। अमेरिका के राजनीतिक परिदृश्य के भीतर, राजनीतिक दल दो विरोधी गुटों से उत्पन्न हुए: संघवादी और संघ-विरोधी। फेडरलिस्ट विरोधी गुट बाद में 1796 में डेमोक्रेटिक-रिपब्लिकन पार्टी में विकसित हुआ और 1856 में, अब्राहम लिंकन ने गुलामी के मुद्दे पर केंद्रित एक नई राजनीतिक इकाई की स्थापना की, जिसे रिपब्लिकन पार्टी के रूप में नामित किया गया। 19वीं शताब्दी में, इंग्लैंड में उदारवादी और गैर-उदारवादी दोनों दलों का गठन हुआ, जिसकी परिणति 1906 ई. में लेबर पार्टी की स्थापना के रूप में हुई। इसी तरह, फ्रांस में, कम्युनिस्ट, समाजवादी और प्रगतिशील दलों के साथ-साथ न्यू रिपब्लिक पार्टियों का संघ, फ्रांसीसी जनता की अभिव्यक्ति के लिए एक माध्यम के रूप में कार्य करता है। इसलिए, वैश्विक स्तर पर, संयुक्त राज्य अमेरिका से उत्पन्न राजनीतिक दलों के ऐतिहासिक पथ ने ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन से भारत की मुक्ति की दिशा में चल रहे आंदोलन को काफी प्रभावित किया है। नेशनल कॉंग्रेस पार्टी की स्थापना 28 दिसंबर, 1885 को मुंबई में ब्रिटिश नागरिक ए. ओ. ह्यूम ने की थी। भारत की स्वतंत्रता के बाद, एक विलक्षण राजनीतिक दल लंबे समय तक भारतीय राजनीतिक परिदृश्य पर हावी रहा। इसके अलावा, 6 अप्रैल, 1980 को भारतीय जनता पार्टी, 14 अप्रैल 1984 को बहुजन समाज पार्टी, 26 दिसंबर, 1925 को कम्युनिस्ट पार्टी, 1964 में कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) और शिरोमणि अकाली दल की स्थापना 14 दिसंबर 1920 को एक पंथक राजनीतिक दल के रूप में स्थापना हुई।²

शोध पद्धति

पंजाब की राजनीति में शिरोमणि अकाली दल की भूमिका : सरदार प्रकाश सिंह बादल के परिपेक्ष्य में एक अध्ययन के लिए द्वितीयक स्रोतों से डाटा एकत्रित किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में शिरोमणि अकाली दल की भूमिका इसके उदय से लेकर पंजाब में सरकार बनाने के विश्लेषण हेतु द्वितीयक स्रोत के रूप में सरकारी और गैर-सरकारी विभागों/संगठनों के प्रतिवेदन, कार्यालयी

² डॉ. राय गुलशन. वर्मा सोमनाथ, डॉ. कुमार सुरेश (2012) भारतीय राजनीति, ज्योति बुक प्रकाशन प्रष्ठ संख्या 87, 89, 92

अभिलेख, रिसर्च जर्नल्स में प्रकाशित शोध पत्र, समाचार पत्र एवं पत्रिकाओं में छपे आलेख इत्यादी से सूचनाओं को एकत्रित किया गया है।

1. शिरोमणि अकाली दल

शिरोमणि अकाली दल भारत तथा पंजाब की राजनीति में एक शताब्दी से स्थापित है। यह दल अपने आप में जितनी प्राचीनता संजोए हुए है, उतनी ही इसका स्वर्णिम ऐतिहासिकता भी है। शिरोमणि अकाली दल का अभ्युदय 1920 के दशक में हुआ, जब शिरोमणि अकाली दल ने गुरुद्वारों को महंतों से आजाद करवाने के लिए छेड़े गए सिख समुदाय शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी (एसजीपीसी) द्वारा आंदोलन में अपनी अहम भागीदारी सुनिश्चित की। यह आंदोलन शिरोमणि अकाली दल के सहयोग में हिंसक रूप ले गया, लगभग 400 लोग इस आंदोलन की भेंट चढ़ गए और 2000 के करीब लोग घायल हुए। इस आंदोलन के विरुद्ध महंतों के साथ औपनिवेशिक सरकार की मौन सहमति भी शामिल थी। आंदोलन के उग्र रूप को देखते हुए औपनिवेशिक सरकार को दबाव में आकर गुरुद्वारा अधिनियम, 1922 पारित करना पड़ा। जिसको 1925 में संशोधित किया गया। परिणाम स्वरूप समस्त सिख समुदाय से संबंधित गुरुद्वारों पर महंतों का नियंत्रण समाप्त हो गया और 15 नवंबर 1920 में गठित एसजीपीएस का नियंत्रण सभी गुरुद्वारों पर स्थापित हो गया। पॉल ब्रास ने एसजीपीएस को पंजाब में उसकी सक्रियता के कारण उसे राज्य का दर्जा दिया है। परंतु ज्ञात रहे कि इस गुरुद्वारा सुधार आंदोलन को लोकप्रिय बनाने में शिरोमणि अकाली दल की महत्वपूर्ण भूमिका थी। इस सफलता के पश्चात शिरोमणि अकाली दल एक ऐसे राजनीतिक दल के रूप में उभरा जो समस्त सिख समुदाय का प्रतिनिधित्व करने का दम भरता हो² अर्थात् शिरोमणि अकाली दल की स्थापना 14 दिसंबर 1920 को एक पंथक राजनीतिक दल के रूप में हुई³ अतः शिरोमणि अकाली दल का जन्म एक जातीय या धार्मिक गुरुद्वारा सुधार आंदोलन से हुआ, जिस कारण स्वतंत्रता से पूर्व तथा पश्चात लंबे समय तक शिरोमणि अकाली दल सिखों का एकमात्र राजनीतिक दल बना रहा तथा महंतों के नियंत्रण से मुक्त गुरुद्वारों को नियंत्रित करने वाली संस्था एसजीपीस अकाली दल की छोटी संसद बनी रही है।

2. पंजाब की राजनीति में शिरोमणि अकाली दल का प्रसार

गुरुद्वारा सुधार आंदोलन से शिरोमणि अकाली दल को लोकप्रियता मिली तथा इसके पश्चात शिरोमणि अकाली दल ने पीछे मुड़कर कभी नहीं देखा और पंजाब की राजनीति में कभी विपक्ष तो कभी सत्ता पक्ष की भूमिका का निर्वाह किया। सर्वप्रथम अकाली दल ने अपनी स्थापना से ही अपने दल का एक पंथक पार्टी के तौर पर प्रसार करना शुरू कर दिया था। जैसे गुरुद्वारा सुधार आंदोलन में अपनी अहम भूमिका निभाकर तथा मोंटेगु-चेमस फोर्ड अधिनियम 1919 के अंतर्गत सांप्रदायिकता के आधार पर सिखों को उनकी कुल जनसंख्या के आधार पर प्रतिनिधित्व न मिलकर कम प्रतिनिधित्व मिलने के कारण शिरोमणि अकाली

² कुमार आशुतोष, सिख गठन (धर्म संस्कृति सिद्धांत) शिरोमणि अकाली दल (1920-2020) विचारधारा, रणनीति और समर्थन आधार। प्रकाशन संसाधन: रुटलेज टेलर और फ्रांसिस समूह

दल द्वारा इसका जोरदार विरोध किया गया। जिस कारण प्रारंभ से ही अकाली दल सिखों के हितों का प्रतिनिधित्व करने वाला एकमात्र राजनीतिक दल के रूप में स्थापित हुआ।

1923 के पंजाब विधान परिषद के चुनाव में तो शिरोमणि अकाली दल को कुछ खास सफलता हाथ नहीं लगी परंतु 1946 के प्रांतीय चुनाव में शिरोमणि अकाली दल ने 22 सीटों पर विजय हासिल की और यूनियनिस्ट पार्टी के गठबंधन में शामिल होकर सरकार का निर्माण किया। परंतु यह चुनावी नतीजे सांप्रदायिक बंटवारे की मुस्लिम लीग की मांग पर मोहर थे। क्योंकि इन चुनावों में मुस्लिम लीग को 86 में से 79 सीटे प्राप्त हुई थी। पंजाब का भी पूर्वी पंजाब और उत्तरी पश्चिमी पंजाब के रूप में बंटवारा होना तय था। जिस कारण शिरोमणि अकाली दल ने आजाद पंजाब की मांग करनी शुरू कर दी। जिसमें अकाली दल के अनुसार मिश्रित हिंदू, सिख तथा मुसलमान होंगे।⁴

1947 के बंटवारे के पश्चात पंजाब का भी बंटवारा हो गया और 1948 में उस समय भारत के हिस्से आए पंजाब की सभी रियासतों को मिलाकर पेप्सू राज्य का निर्माण किया गया, जिसमें 48% आबादी सिख थी। शिरोमणि अकाली दल चाहता था की भाषा के आधार पर सिख बहुल क्षेत्रों को पेप्सू राज्य के साथ मिलाकर अलग से राज्य की मांग की जाए। इस मत को बल तब और मिला जब 1957 में गठित सच्चर कमेटी ने हिंदी तथा पंजाबी भाषा को आधिकारिक भाषा का दर्जा प्रदान कर दिया। परंतु अकाली दल की अलग राज्य की मांग के साथ सांप्रदायिकता का तत्व छुपा हुआ था। जिस कारण केंद्र सरकार ने उनकी अलग राज्य की मांग खारिज कर दी तुरंत अकाली नेता संत फतेह सिंह तथा मास्टर तारा सिंह के सक्रिय प्रयासों तथा कई कार्यकर्ताओं की गिरफ्तारियों के बाद अंत 1966 में पंजाबी भाषा के आधार पर पंजाब राज्य का अस्तित्व हुआ। इस विजय से शिरोमणि अकाली दल सिखों के दिलों में घर कर गया और 1967 के विधानसभा चुनाव में अकाली दल पंजाब की राजनीति में पहली बार सत्ता रुढ़ हुआ और गुरनाम सिंह 1966 के बाद पंजाब के पहले मुख्यमंत्री बने।⁵

ततपश्चात शिरोमणि अकाली दल ने पंजाब के हितों को सर्वोपरि रखते हुए पंजाब के पानी को बचाने के लिए 8 अप्रैल 1982 को हरियाणा सीमा पर स्थापित कर्पूरी गांव में एसवाईएल नहर को इंदिरा गांधी के उद्घाटन के बाद जोड़ा गया तो अकाली दल ने इसका पुरजोर विरोध किया तथा कर्पूरी गांव में ही पक्का धरना लगा दिया, जिसे कर्पूरी मोर्चा कहा जाता है। एसवाईएल एक नहर है जिसके माध्यम से पंजाब का पानी हरियाणा को दिया जाना था परंतु के विरोध के कारण इस नहर का निर्माण रुक गया और यह मुद्दा आज भी ज्वलंत बना हुआ है। इन आंदोलन के कारण अकाली दल को पंजाब, पंजाबियत, किसानी, पानी तथा जवानी का रखवाला कहा गया। इसी कारण शिरोमणि अकाली दल 1966 से अब तक कई बार पंजाब की सत्ता पर सत्तासीन रहा है।⁶

⁴ सिंह खुशबूंत, (पांचवा संस्करण 2020) मेरा लहू लूहान पंजाब, प्रकाशन: राजकमल पेपर बैकस, पृष्ठ संख्या 46

⁵ कुमार आशुतोष, सिख गठन (धर्म संस्कृति सिद्धांत) शिरोमणि अकाली दल (1920-2020) विचारधारा, रणनीति और समर्थन आधार। प्रकाशन संसाधन: रूलेज टेलर और फ्रांसिस समूह

⁶ Thapa Sunil, (23Aug2020) Punjabi Jagaran –<https://www.punjabijagran.com>

3. सरदार प्रकाश सिंह बादल एवं अकाली दल की भूमिका

सरदार प्रकाश सिंह बादल का जन्म 8 दिसंबर 1927 को गांव अबुल खुराना, जिला श्री मुक्तसर साहिब में पिता सरदार रघुराज तथा माता जसवंत कौर के घर में हुआ था। सरदार प्रकाश सिंह बादल को पंजाब की राजनीति में लेकर आने का श्रेय ज्ञानी करतार सिंह को जाता है, जो की 1925 में स्थापित एसजीपीसी के टकसाली अकाली सदस्य के रूप में कार्य करते चले आ रहे थे। सरदार प्रकाश सिंह बादल ने अपनी राजनीतिक शुरुआत 1951 में गांव बादल के सरपंच /प्रधान बन कर की। सरपंच के तौर पर सरदार प्रकाश सिंह बादल ने अपनी ऐसी विलक्षण पहचान बना ली जिसका परिणाम 1957 में उन्हें कांग्रेस पार्टी की ओर से मलोट विधानसभा क्षेत्र से विधायक बनकर प्राप्त हुआ। इसके पश्चात सरदार प्रकाश सिंह बादल ने पीछे मुड़कर कभी नहीं देखा और अपने राजनीतिक जीवन में गांव के सरपंच से लेकर पंजाब के मुख्यमंत्री बनने का सफर शिरोमणि अकाली दल के संरक्षण के रूप में तय किया। भाषा के आधार पर पंजाबी राज्य की मांग करने वाले अकाली नेताओं में से एक सरदार प्रकाश सिंह बादल भी थे, जिस कारण उन्हें होशियारपुर जेल का संताप भी भोगना पड़ा। वर्ष 1966 में पंजाबी राज्य की मांग तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी द्वारा मानने पर शिरोमणि अकाली दल तथा सरदार प्रकाश सिंह बादल की लोकप्रियता में इतना उछाल आया कि 1970 में वह भारत के इतिहास में पहली बार किसी राज्य के कम आयु के मुख्यमंत्री बने।⁷ वर्ष 2012 में पंजाब के पांचवीं बार मुख्यमंत्री बने तो भारत के सबसे अधिक उम्रदराज के मुख्यमंत्री बनाने का रिकॉर्ड भी उनके नाम दर्ज हुआ। सरदार प्रकाश सिंह बादल अपने जीवन में 10 बार विधायक चुने गए और पांच बार पंजाब के मुख्यमंत्री बने।⁸

वर्ष 1973 ई में पारित आनंदपुर साहब प्रस्ताव (जो कि पंजाब को कुछ विशेष अधिकार तथा मांगों से संबंधित था) को संघीय सरकार ने मानने से इनकार कर दिया तो मध्य मार्गीय अकाली नेता जैसे हरचंद सिंह लोंगोवाल, सरदार प्रकाश सिंह बादल, गुरचरण सिंह टोहड़ा ने पूरे आनंदपुर साहब प्रस्ताव में से केवल दो मांगों को मांगना शुरू कर दिया। पहली मांग तो यह कि चंडीगढ़ को पंजाब की राजधानी बनाया जाए, दूसरा हरियाणा और पंजाब पानी विवाद को निपटाने के लिए यह मामला सर्वोच्च न्यायालय को हस्तांतरित किया जाए। इन दो मांगों की तरफ जब केंद्र सरकार ने ध्यान नहीं दिया, तो 1982 ई. में अकाली दल ने केंद्र सरकार के विरुद्ध धर्म मोर्चा खोल दिया और 30000 अकाली कार्यकर्ता जेल में डाल दिए गए।⁹

परंतु यह मामला आज भी शिरोमणि अकाली दल उठाता रहता है। परंतु इसका अभी तक कोई समाधान नहीं निकला है। सरदार प्रकाश सिंह बादल कांग्रेस के प्रारंभ से ही आलोचक रहे थे। इसलिए जब 1975 में श्रीमती इंदिरा गांधी ने भारत में आपातकाल लगा दिया था, तो शिरोमणि अकाली दल ने इसका पुरजोर विरोध किया। परिणामस्वरूप 9 जुलाई 1975 को अकाली दल के पहले जत्थे ने गिरफ्तारी दी और सरदार प्रकाश सिंह बादल ने शिरोमणि अकाली दल के निर्देशों को मानते हुए आपातकाल के विरोध में 19 माह जेल का संताप होगा। यह सत्य है कि सरदार प्रकाश सिंह बादल के लिए पार्टी मां के समान

⁷ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਪੰਜਾਬ ਦਾ "ਸਰਦਾਰ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਸਿੰਘ ਬਾਦਲ ਦੇ ਜੀਵਨ ਦੀ ਝਲਕ" (2023) सरदार प्रकाश सिंह बादल की अंतिम अरदास में लोगों को वितरण की गई पुस्तक से उद्धरण।

⁸ ABP Sanjha –<https://punjabi.abplive.com>>punjab, 25 April 2023

⁹ सिंह खुशवंत, (पांचवा संस्करण 2020) मेरा लहू लूहान पंजाब, प्रकाशन: राजकमल पेपर बैक्स, पृष्ठ संख्या 59

थी। वह पार्टी के दिशा निर्देशों को बिना किंतु—परंतु किए खुशी-खुशी मानते थे। इसलिए अल्पसंख्यक आयोग के पूर्व अध्यक्ष त्रिलोचन सिंह ने लिखा भी है कि "वह सरदार प्रकाश सिंह बादल में जो सबसे बड़ा गुण मानते हैं, वह यह कि वे पार्टी के वफादार रहे और बिना किसी किंतु—परंतु के पार्टी के निर्देशों को मानते रहे।" उन्होंने पंजाब तथा पार्टी के लिए अपने जीवन के 17 साल कारावास में भोगे। इसलिए 2015 में जेपी नारायण की 113वीं बरसी के उपलक्ष में आयोजित कार्यक्रम में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने उनकी मौजूदगी में उन्हें भारत का नेतृत्व मंडेला कहकर संबोधित किया।¹⁰

अतः सरदार प्रकाश सिंह बादल को शिरोमणि अकाली दल का संरक्षक कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। क्योंकि उनके नेतृत्व में शिरोमणि अकाली दल ने भारत की राजनीति में अपनी अलग ही पहचान बनाई। सरदार प्रकाश सिंह बादल 1995 से 2008 तक शिरोमणि अकाली दल के अध्यक्ष रहे। उनके सरहनीय कार्यों तथा पंजाब की राजनीति में देने को देखते हुए भारत सरकार ने उन्हें भारत के दूसरे बड़े पुरस्कार पद्म विभूषण से 2015 में सुशोभित किया।¹¹

4. मुख्यमंत्री के रूप में सरदार प्रकाश सिंह बादल के कार्य

पंजाब की राजनीति में सरदार प्रकाश सिंह बादल एक युग के समान थे। क्योंकि पंजाब की अधिकांश राजनीति पंजाबी भाषा, संस्कृति, अलग पहचान, अलग भौगोलिक परिस्थितियों, तथा धर्म के इर्द-गिर्द ही घूमती प्रतीत होती है और इन स्वायतवादी तत्वों को उठाने वाला शिरोमणि अकाली दल था या शिरोमणि अकाली दल के वफादार सिपाही के रूप में जाने जाने वाले सरदार प्रकाश सिंह बादल थे। इसी बात का प्रतिविंब पत्रकार जगतार सिंह ने बीबीसी न्यूज़ पंजाबी को दिए साक्षात्कार में दिखाया था जिसमें उन्होंने सरदार प्रकाश सिंह बादल के संदर्भ में बहुत सुंदर शब्दों में कहा था कि 'उनका (सरदार प्रकाश सिंह बादल) कहना था कि हमारा तो एक हाथ पगड़ी को संभालने में तथा दूसरा हाथ कुर्सी को संभालने में रहता है और पंजाब में तो यह दोनों संभालने मुश्किल है।' प्रकाश सिंह बादल अपने कथन अनुसार कुर्सी और पगड़ी को बचाते हुए 1970, 1977, 1997, 2007 तथा 2012 में पांच बार पंजाब के सफल मुख्यमंत्री रहे।¹² सरदार प्रकाश सिंह बादल ने मुख्यमंत्री के रूप में पंजाब, पंजाबियत, किसानी, जवानी की सामाजिक, आर्थिक, संस्कृति तथा राजनीतिक रूप में की गई सेवा का वर्णन निम्न प्रकार है—

1. राजनीतिक कार्य : सरदार प्रकाश सिंह बादल ने राजनीतिक क्षेत्र में अहम तथा अविस्मरणीय कार्य किए। जैसे 1966 में पंजाब को भाषा के आधार पर पृथक राज्य का दर्जा दिलवाना, 1975 ई. में प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी द्वारा घोषित आपातकाल का पुरजोर विरोध करना तथा 19 माह तक कारावास का संताप भोगना, 1982 ई. में यमुना सतुल लिंक नहर के निर्माण को रुकवाना जिसके माध्यम से बादल के अनुसार पंजाब के हक का पानी हरियाणा को दिया जाना था। तथा चंडीगढ़ को पंजाब की राजधानी बनाने और पंजाब हरियाणा पानी विवाद को सर्वोच्च न्यायालय को भेजने के लिए रेल, मार्ग, पानी तथा जरूरतमंद

¹⁰ लाती खुशहाल, बीबीसी पत्रकार (27 जनवरी 2022) BBC <https://www.bbc.com/Punjabi>

¹¹ wikipedia https://pa.wikipedia.org/wiki/ਪ੍ਰਕਾਸ਼_ਸਿੰਘ_ਬਾਦਲ

¹² धालीवाल सरबजीत सिंह, रिपोर्टर (29 अप्रैल 2023) BBC News पंजाबी "ਸਰदार प੍ਰਕਾਸ਼ ਸਿੰਘ ਬਾਦਲ ਦੇ ਸਿਆਸੀ ਸਫਰ ਦੇ ਅਹਿਮ ਪੜਾਅ"

वस्तुओं की सप्लाई को रोककर केंद्र सरकार के विरुद्ध धर्म युद्ध मोर्चा खोलना, इत्यादि। यह सब ऐसे कार्य थे जिन्होंने प्रकाश सिंह बादल को पंजाब की राजनीति का भीष्म पितामह करार दिया।

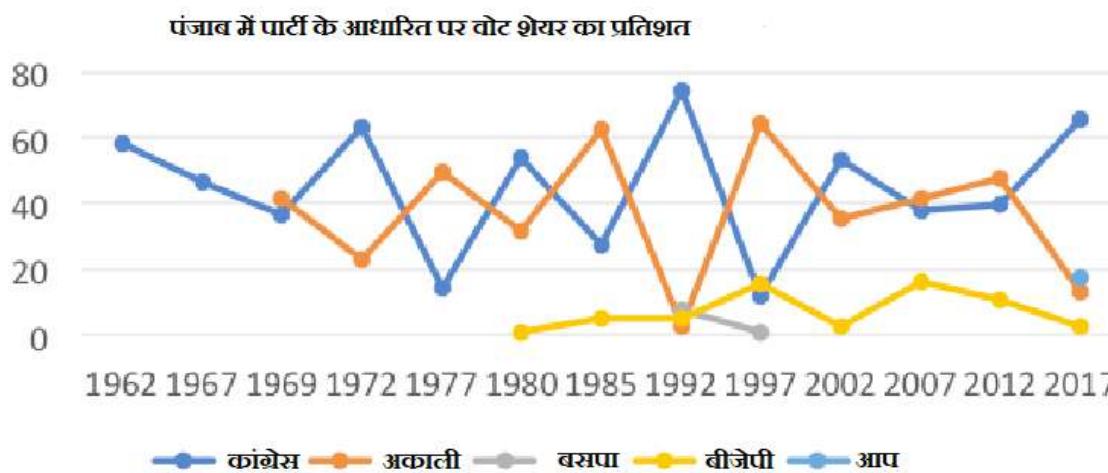
2. आर्थिक क्षेत्र में कार्य : सरदार प्रकाश सिंह बादल के मुख्यमंत्री रहते हुए पंजाब ने नई विकास गाथा लिखी। पंजाब को बिजली के क्षेत्र में सर प्लस बनाने के लिए सरदार प्रकाश सिंह बादल ने तलवंडी साबो, राजपुरा तथा गोविंदवाल में तीन थर्मल प्लांट स्थापित करवाए ताकि पंजाब को बिजली सर प्लस सूबा घोषित किया जा सके। इसके अतिरिक्त पंजाब के लोगों को रोजगार दिलवाने के लिए वह केंद्र सरकार से अनेक पंजाब के लिए प्रोजेक्ट लेकर आए। जिनमें मुख्य बठिंडा में स्थापित 19000 करोड़ की लागत वाला गुरु गोविंद सिंह रिफायनरी प्रोजेक्ट है। पंजाब में बेहतर हाईवे, ओवर ब्रिज, रोड, कॉलेज- यूनिवर्सिटी तथा नए हवाई अड्डे बनाने का श्रेय भी सरदार प्रकाश सिंह बादल को जाता है। इन विकास कार्यों को गति उनके 2007 से 2017 दस वर्षों के लगातार कार्यकाल में मिली। उन्होंने स्वयं 2011 वर्ष को पंजाब के लिए विकास का वर्ष कहा था।

3. सामाजिक एवं सांस्कृतिक कार्य : सामाजिक तथा सांस्कृतिक क्षेत्र में सरदार प्रकाश सिंह बादल ने बेजोड़ कार्य किया। उन्होंने ही मुख्यमंत्री रहते हुए गरीबों दलितों के लिए दो रुपए किलो आटा-दाल स्कीम शुरू की, जो बाद में बहुत लोकप्रिय हुई। इसके अतिरिक्त गरीब घरों की बन्नियों की शादी के लिए शगुन स्कीम के रूप में आर्थिक सहायता, गरीबों को बिजली यूनिट 200 देना साइकिल मुफ्त को छात्राओं वाली पढ़ने में स्कूल कर शुरू स्कीम भागों मार्ई में 12-2011 तथा देना मुफ्त, ताकि वह दूर दराज क्षेत्रों से स्कूल में जा सके। उनके मुख्यमंत्री रहते हुए शिक्षा के साथ बच्चों को जोड़ने के लिए कई योजनाएं प्रारंभ की गई। जैसे हर गोविंद खुराना छात्रवृत्ति जिसमें हो हर विद्यार्थी को ₹30000 प्रति वर्ष देने का प्रावधान था। उनके इन्हीं असाधारण कार्यों से पंजाब उनके कार्यकाल में शिक्षा क्षेत्र में 13वें स्थान से तीसरे स्थान पर पहुंच गया। पंजाबी संस्कृति के प्रति उनका गहरा प्रेम था। इसलिए उन्होंने पंजाबी संस्कृति को संरक्षित करने तथा विश्व के सामने प्रदर्शित करने के लिए अनेक यादगार स्मारक तथा म्यूजियम स्थापित करवाए। जैसे श्री आनंदपुर में विरासत-ए-खालसा की स्थापना, संगरूर में बड़ा घालूघरा यादगार की स्थापना, बाबा बंदा सिंह बहादुर यादगार स्मारक चपड़चिड़ी मोहाली में स्थापित करना तथा अमृतसर में स्टेट वॉर हीरोज मेमोरियल और अजायब घर की स्थापना करना। उनके इन्हीं अमिट सांस्कृतिक कार्यों के कारण उन्हें 2011 में अकाल तख्त साहब ने पंथ रत्न फखर ए कोम सम्मान से नवाजा।¹³

¹³ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਪੰਜਾਬ ਦਾ "ਸਰਦਾਰ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਸਿੰਘ ਬਾਦਲ ਦੇ ਜੀਵਨ ਦੀ ਝਲਕ" (2023) ਸਰਦਾਰ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਸਿੰਹ ਬਾਦਲ ਕੀ ਅੰਤਿਮ ਅਰਦਾਸ ਮੌਲਿਗੇ ਕੀ ਵਿਤਰਣ ਕੀ ਗਈ ਪੁਸ਼ਟ ਸੇ ਉਦਘਾਰਣ। ਪ੍ਰਾਤਿ ਸੰਖਾ 13 ਸੇ 18

5. शिरोमणि अकाली दल का संक्षिप्त मूल्यांकन

शिरोमणि अकाली दल का इतिहास संघर्षों से भरा पड़ा है। जिसका अध्ययन बहुत से राजनीतिक विश्लेषकों ने किया हैं। हालाँकि शोधार्थी इस तथ्य से भी अनभज्ज रहे हैं कि शिरोमणि अकाली दल अपनी स्थापना के पश्चात कई बार 1928, 1939, 1942, 1960, 1967, 1969, 1971, 1980, 1985, 1979 तथा 1999 में आंतरिक रूप से विघटित हुआ।¹⁴ परंतु फिर भी पहली बार 1967 में शिरोमणि अकाली दल सत्तासीन होने के बाद कुल 9 बार पंजाब की सत्ता पर सत्तासीन हुआ। इसके बोट प्रतिशत को संक्षिप्त रूप में निम्न चार्ट के माध्यम से समझाया जा सकता है-



स्रोत: टीसीपीडी द्वारा ईसीआई डेटा से संदर्भित

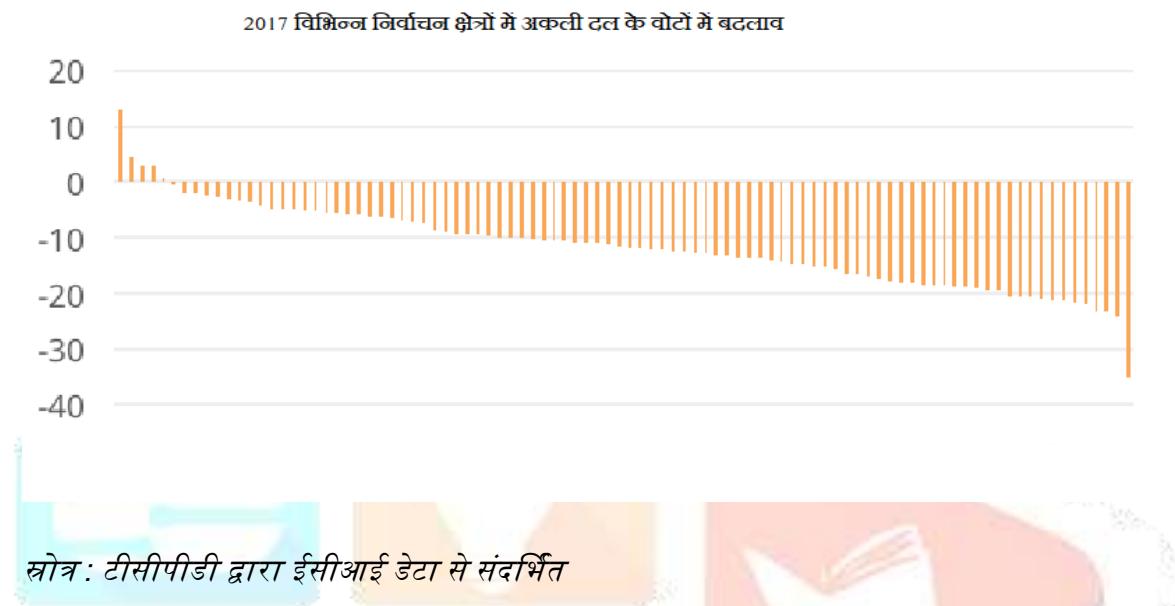
वर्तमान में शिरोमणि अकाली दल पंजाब की राजनीति में बुरे दौर से गुजर रहा है इसका आकलन पंजाब विधानसभा चुनाव 2017 तथा 2022 और लोकसभा चुनाव 2019 तथा 2024 से सहज ही लगाया जा सकता है। 10 वर्षों तक (2007 से 2017) शिरोमणि अकाली दल पंजाब की सत्ता पर सत्तासीन रहा। परंतु 2017 के विधानसभा चुनाव में शिरोमणि अकाली दल 15 सीटों पर ही सिमट गया और उसका बोट प्रतिशत 25.2 रहा।¹⁵

इन चुनाव में पंजाब की इकलौती क्षेत्रीय पार्टी विपक्ष की भूमिका भी नहीं निभा पाई और कांग्रेस तथा आम आदमी पार्टी के बाद तीसरे स्थान पर खिसक गई। 2019 के लोकसभा चुनाव में तो शिरोमणि अकाली दल 2 लोकसभा सीटों पर ही जीत हासिल कर सका परंतु उसका बोट प्रतिशत 2017 विधानसभा चुनावों के मुकाबले 27.8 प्रतिशत हो गया। 2022 के पंजाब

¹⁴ चन्नी इकबाल सिंह (28 जून 2024) "सुखबीर को अध्यक्ष पद से हटाना विपक्षी नेताओं के लिए आसान नहीं" पंजाब केसरी समाचार पत्र, पृष्ठ 4.

¹⁵ कुमार आशुतोष (2017) राजनीतिक परिदृश्य में पंजाब राज्य विधानसभा चुनाव, जेपीएस, पृष्ठ संख्या 175,180 से 183

विधानसभा चुनावी परिणामों ने तो शिरोमणि अकाली दल को पूरी तरह से ही नकार दिया अर्थात् शिरोमणि अकाली दल 3 विधानसभा सीटों पर ही विजय हासिल कर सका और उसका वोट प्रतिशत भी गिरकर 18.4 पर आ गया।¹⁶ परंतु अंतिम पड़ाव अभी बाकी था 2024 के लोकसभा चुनाव जिसमें शिरोमणि अकाली दल 2019 लोकसभा चुनाव में प्राप्त 2 सीटों से 1 सीट पर ही विजय हासिल कर सका और उसका वोट प्रतिशत 2019 लोकसभा चुनाव में प्राप्त 27.8 प्रतिशत से 13.42% पर आ गया।¹⁷



आज वर्तमान में 100 साल पुराना राजनीतिक दल शिरोमणि अकाली दल जो कि पंजाब की इकलौती क्षेत्रीय पार्टी तथा सिखों का प्रतिनिधित्व करने वाली इकलौती पार्टी का दम भरने वाली शिरोमणि अकाली दल आज राजनीतिक रूप से अपने सबसे बुरे दौर से गुजर रही है। शिरोमणि अकाली दल के वर्तमान पंजाब की चुनावी राजनीति में हालात ऐसे बने हुए हैं कि उसे 2024 लोकसभा चुनाव में उम्मीदवारों की विजय के कारण रिक्त हुई पंजाब की चार विधानसभा सीटों पर हो रहे उपचुनावों में अपने उम्मीदवार खड़े करने से पीछे हटना पड़ा।¹⁸ इसके अतिरिक्त 2007 के अपने शासनकाल दौरान डेरा सच्चा सौदा गुरमीत राम रहीम को माफी देने, 2015 में बरगाड़ी में गुरु ग्रंथ साहब के स्वरूपों की बेअदबी और कोटकपूरा गोलीकांड में सिखों की हत्या तथा विवादासपद कृषि कानून को बनाने में शिरोमणि अकाली दल की भूमिका जैसे लगे इल्जाम आज शिरोमणि अकाली दल के सामने मुख्य चुनौती बनकर खड़े हैं।¹⁹ इन मुद्दों के कारण आज शिरोमणि अकाली दल की पथक तथा किसानों की पार्टी की द्वितीय धूमिल हुई है।

¹⁶ PC: Punjab 2019, <https://www.indiavotes.com/punj>

¹⁷ कुमार कंवल (2022) पंजाब राज्य में समकालीन चुनावी राजनीति उभरती हुई लोकाचार, बड़ौदा विश्वविद्यालय जर्नल, पृष्ठ संख्या 56 तथा 57.

¹⁸ Times of India (e-paper) 5 जून 2024.

¹⁹ रॉबिन रविंद्र सिंह (1 जुलाई 2024) "शरण की और शिरोमणि अकाली दल बादल" पंजाब केसरी समाचार पत्र, पृष्ठ संख्या 4.

इसके अतिरिक्त शिरोमणि अकाली दल में एक रुष्ट खेमा जिसमें प्रोफेसर प्रेम सिंह चंदूमाजरा, बीबी जागीर कौर, सुरजीत सिंह रखडा, सिकंदर सिंह मलूका, परमिंदर सिंह ढींडसा सहित कुल 60 अकाली नेताओं ने सांझी कांफ्रेंस बुलाकर सरदार प्रकाश सिंह के सुपुत्र सरदार सुखबीर सिंह बादल से शिरोमणि अकाली दल कि लगातार चुनावों में करारी हार के कारण अध्यक्षता से इस्तीफा मांगा। अब तो पंजाब में शिरोमणि अकाली दल की हालत इतनी पतली हो चुकी है कि जत्थेदार गुरुप्रताप सिंह वडाला ने तो शिरोमणि अकाली सुधार आंदोलन पंजाब में चला रखा है। अतः एक शताब्दी पुरानी पार्टी शिरोमणि अकाली दल अपनी राजनीतिक तथा सांस्कृतिक अस्तित्व को बचाने के लिए संघर्ष कर रही है।

निष्कर्ष

शिरोमणि अकाली दल ने पंजाब की राजनीति तथा संस्कृति को लंबे समय तक सींचा है। दल ने अपनी पहचान एक स्वायतवादी राजनीतिक दल के रूप में जरूर बनाई परंतु उनका सवायतवादी एजेंडा कभी द्रविड़ मुनेत्र कड़गम या नेशनल कांफ्रेंस पार्टी जैसा नहीं रहा। शिरोमणि अकाली दल ने हमेशा ही भारत संघ तथा संविधान के अंतर्गत रहकर ही सवायतवादी तत्वों जैसे अलग भाषा, अलग धर्म—संप्रदाय तथा विशिष्ट भौगोलिक परिस्थितियों के आधार पर अलग पंजाबी राज्य की मांग सहित विशेषाधिकार या मांगे मांगी। जिस उद्देश्य से शिरोमणि अकाली दल की स्थापना 1920 में की गई थी और जिस शिरोमणि अकाली दल को 1966 के बाद सरदार प्रकाश बादल ने सींचा था, आज वह शिरोमणि अकाली दल अपने उन पंथक उद्देश्यों से विमुख होकर सिद्धांतहीन होता जा रहा है।²⁰ शिरोमणि अकाली दल को अपनी पुरानी गलतियों से सीख लेते हुए अपने आप को संगठित करते हुए पार्टी के पथक मुद्दों को प्रमुखता देनी होगी, जिस कारण दल की स्थापना और विस्तार हुआ।

संदर्भ सूची

- कुमार आशुतोष, पंजाब में चुनावी राजनीति (1966– 2004) जेपीएस पृष्ठ संख्या 112 से 114.
- डॉ. रॉय गुलशन. वर्मा सोमनाथ, डॉ. कुमार सुरेश (2012) भारतीय राजनीति, ज्योति बुक प्रकाशन पृष्ठ संख्या 87. 89, 92
- कुमार आशुतोष, सिख गठन (धर्म संस्कृति सिद्धांत) शिरोमणि अकाली दल (1920-2020) विचारधारा, रणनीति और समर्थन आधार। प्रकाशन संसाधन: रूटलेज टेलर और फ्रांसिस समूह
- सिंह खुशवंत, (पांचवा संस्करण 2020) मेरा लहू लूहान पंजाब, प्रकाशन: राजकमल पेपर बैक्स, पृष्ठ संख्या 46

²⁰ चन्नी इकबाल सिंह (28 जून 2024) "सुखबीर को अध्यक्ष पद से हटाना विपक्षी नेताओं के लिए आसान नहीं" पंजाब केसरी समाचार पत्र, पेज नंबर 4.

5. कुमार आशुतोष, सिख गठन (धर्म संस्कृति सिद्धांत) शिरोमणि अकाली दल (1920-2020) विचारधारा, रणनीति और समर्थन आधार। प्रकाशन संसाधन: रूटलेज टेलर और फ्रांसिस समूह
6. Thapa Sunil, (23Aug2020) Punjabi Jagaran –<https://www.punjabijagran.com...>
7. ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਪੰਜਾਬ ਦਾ "ਸਰਦਾਰ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਸਿੰਘ ਬਾਦਲ ਦੇ ਜੀਵਨ ਦੀ ਝਲਕ" (2023) ਸਰਦਾਰ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਸਿੰਘ ਬਾਦਲ ਕੀ ਅੰਤਿਮ ਅਰਦਾਸ ਮੌਲਿਗੇ ਕੋ ਵਿਤਰਣ ਕੀ ਗਈ ਪੁਸ਼ਟਕ ਸੇ ਉਦਘਾਰਣ।
8. ABP Sanjha –<https://punjabi.abplive.com>>punjab,25April2023
9. ਸਿੰਘ ਖੁਸ਼ਵਾਂਤ, (ਪਾਂਚਵਾਂ ਸੰਸਕਰਣ 2020) ਮੇਰਾ ਲਾਹੂ ਲੂਹਾਨ ਪੰਜਾਬ, ਸੰਖਿਆ ਪ੍ਰਾਤਿ, ਵੈਕਸ ਪੇਪਰ ਰਾਜਕਮਲ :ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਨ 59
10. ਲਾਲੀ ਖੁਸ਼ਹਾਲ, ਬੀਬੀਸੀ ਪਤ੍ਰਕਾਰ (27 ਜਨਵਰੀ 2022) BBC <https://www.bbc.com>>Punjabi
11. wikipedia <https://pa.wikipedia.org>>wiki>ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਸਿੰਘ ਬਾਦਲ
12. ਧਾਲੀਵਾਲ ਸਰਬਜੀਤ ਸਿੰਘ, ਰਿਪੋਰਟਰ (29 ਅਪ੍ਰੈਲ 2023) BBC News ਪੰਜਾਬੀ "ਸਰਦਾਰ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਸਿੰਘ ਬਾਦਲ ਦੇ ਸਿਆਸੀ ਮਫ਼ਰ ਦੇ ਅਹਿਮ ਪੜਾਅਂ"
13. ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਪੰਜਾਬ ਦਾ "ਸਰਦਾਰ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਸਿੰਘ ਬਾਦਲ ਦੇ ਜੀਵਨ ਦੀ ਝਲਕ" (2023) ਸਰਦਾਰ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਸਿੰਘ ਬਾਦਲ ਕੀ ਅੰਤਿਮ ਅਰਦਾਸ ਮੌਲਿਗੇ ਕੋ ਵਿਤਰਣ ਕੀ ਗਈ ਪੁਸ਼ਟਕ ਸੇ ਉਦਘਾਰਣ। ਪ੍ਰਾਤਿ ਸੰਖਿਆ 13 ਤੋਂ 18 ਤਕ।
14. ਚੜ੍ਹੀ ਇਕਾਵਾਲ ਸਿੰਘ (28 ਜੂਨ 2024) "ਸੁਖਬੀਰ ਕੋ ਅਧਿਕਾਰ ਪਦ ਸੇ ਹਟਾਨਾ ਵਿਪਕਿ ਨੇਤਾਓਂ ਕੇ ਲਿਏ ਆਸਾਨ ਨਹੀਂ"ਪੰਜਾਬ ਕੇਸਰੀ ਸਮਾਚਾਰ ਪਤ੍ਰ, ਪੇਜ ਨੰਬਰ 4.
15. ਕੁਮਾਰ ਆਸ਼ੁਤੋ਷ (2017) ਰਾਜਨੀਤਿਕ ਪਰਿਦ੃ਸ਼ਿਆ ਮੌਲਿਗੇ ਪੰਜਾਬ ਰਾਜ ਵਿਧਾਨਸਭਾ ਚੁਨਾਵ, ਜੇਪੀਏਸ, ਪ੍ਰਾਤਿ ਸੰਖਿਆ 175 ,180 ਸੇ 183
16. PC: Punjab 2019, <https://www.indiavotes.com>>punj
17. ਕੁਮਾਰ ਕੰਵਲ (2022) ਪੰਜਾਬ ਰਾਜ ਮੌਲਿਗੇ ਸਮਕਾਲੀਨ ਚੁਨਾਵੀ ਰਾਜਨੀਤਿ ਉਭਰਤੀ ਹੁੰਡੀ ਲੋਕਾਚਾਰ, ਬੜੌਦਾ ਵਿਸ਼ਵਿਦਿਆਲਾਕ ਜਰਨਲ, ਪ੍ਰਾਤਿ ਸੰਖਿਆ 56 ਤਥਾ 57.
18. Times of India (e-paper) 5 ਜੂਨ 2024.
19. ਰੱਬਿਨ ਰਵਿੰਦਰ ਸਿੰਘ (1 ਜੁਲਾਈ 2024) "ਸੁਖਬੀਰ ਕੋ ਅਧਿਕਾਰ ਪਦ ਸੇ ਹਟਾਨਾ ਵਿਪਕਿ ਨੇਤਾਓਂ ਕੇ ਲਿਏ ਆਸਾਨ ਨਹੀਂ ਪੰਜਾਬ" ਸੰਖਿਆ 4.
20. ਚੜ੍ਹੀ ਇਕਾਵਾਲ ਸਿੰਘ 28)ਜੂਨ "(2024)ਸੁਖਬੀਰ ਕੋ ਅਧਿਕਾਰ ਪਦ ਸੇ ਹਟਾਨਾ ਵਿਪਕਿ ਨੇਤਾਓਂ ਕੇ ਲਿਏ ਆਸਾਨ ਨਹੀਂ ਪੰਜਾਬ" .4 ਨੰਬਰ ਪੇਜ ,ਪਤ੍ਰ ਸਮਾਚਾਰ ਕੇਸਰੀ